



# भाई और बहन की आपस में चुदाई-2

“मैं अपने भाई से चुदाई का मजा ले चुकी थी. मगर आज मेरा दिल कर रहा था कि मेरी ममेरी बहन भी हम भाई-बहन की चुदाई को अपनी आंखों से देखे.  
कैसे हम दोनों ने बहन को गर्म किया ? ...”

Story By: (aarzoo\_k)

Posted: Thursday, August 19th, 2004

Categories: [भाई बहन](#)

Online version: [भाई और बहन की आपस में चुदाई-2](#)

# भाई और बहन की आपस में चुदाई-2

कैसे हैं आप सब ? एक बार फिर से आरजू अपनी अधूरी कहानी पूरी करने आप सबके सामने हाज़िर है.

मेरी कहानी का पहला भाग जिसका टाइटल था

भाई और बहन की आपस में चुदाई-1

तो हाज़िर है इसी कहानी का पार्ट 2

उस दिन छत पर जब हम दोनों चुदायी लीला कर रहे थे तब ही मेरी मुमानी की बड़ी लड़की अफ़रोज़ छत पर आ गयी थी और चुपके से छुप कर हमारी बातें सुन रही थी और देख भी रही थी.

भाई ने मुझे बांहों में भर लिया और अपना तना हुआ लंड मेरी चूत से रगड़ने लगे. मैं अफ़रोज़ को दिखाने के लिये मादक सिसकियां निकाल रही थी मुंह से- आआययीई ... भाई जान, बहुत गुदगुदी हो रही है ... आआह्हह प्लीज़ ... अब घुसा दीजिये अपना लंड मेरी चूत में!

और मैंने अपने दोनों हाथ से भाई का लंड पकड़ लिया और मसलने लगी.

भाई भी अफ़रोज़ को दिखाने के लिये ज़ोर ज़ोर से कराह रहे थे ताकि इसकी चूत में भी खुजली होने लगे और वो भाई की टांगों के नीचे खुद ब खुद चूत फ़ैला कर पसर जाये. अब उन्होंने अपने हाथ से मेरी चूत को फ़ैलाया और अपने लौड़े का मुहाना मेरी चूत पर रख कर मुझसे धीरे से बोले देखो- इस तरह की एक्टिंग करना कि अफ़रोज़ पूरी तरह से चुदासी हो जाये! पता है कि तुम्हारी चूत ढीली हो चुकी है मगर फिर भी नाटक करना कुंवारी होने का!

इतना कहकर भाई ने जरा सा लंड ही अंदर ठेला था कि मैं चिल्ला पड़ी- आआह्हह

भाईईजान ... बहुत दर्द कर रहा है प्लीज़ आहिस्ता आहिस्ता कीजिये आराम से !  
भाई ने अपने होठों में मेरी चूची भर ली और चूसने लगे और एक धक्का और मारा. इस बार  
उनका करीब 5" लंड अंदर समा गया. मैंने उनकी कमर जोर से पकड़ ली और अपनी दोनों  
टांगें उनकी पीठ से किसी कैंची की तरह फंसा ली और अपने चूतड़ को ऊपर की तरफ़  
उछालने लगी- आआआ आह्हह्ह ह्ह भाई ... बहुत मज़ा आ रहा है. अब तो घुसा  
दीजिये अपना पूरा बाकी का बचा हुआ लंड भी ! अययीईई आअह्हह्ह ... कसम से जवानी  
में चुदवाने का मज़ा ही अलग है !

ये सब मैं अफ़रोज़ को सुनाने के लिये कह रही थी जिसे वो सुन भी रही थी और बहुत मज़े  
लेकर हम दोनों को देख भी रही थी. उसे नहीं पता था कि हम लोग उसे देख चुके हैं.

तब ही भाई ने अपना पूरा लंड मेरी चूत में जोरदार धक्के के साथ घुसेड़ दिया. मैं आआय  
यययीईई इस्सस्स इस्सस्स अम्मी माआअर्रर डालाआआअ भाईईइ बहुत दर्द हो रहा है.  
आप ज़रा भी तरस नहीं खाते अपनी बहन पर ... पूरे जल्लाद बन जाते हैं. चोदते वक्त  
कहीं इतनी जोर से भी धक्का मारा जाता है ?

और तब ही भाई मेरी निप्पल को दांत से दबाते हुए बहुत ही आराम से धक्के मारने लगे.  
अब मैं ऊऊओफ़फ़ ऊऊओफ़फ़ फ़फ़फ़ कर रही थी और अब इस तरह दर्शा रही थी कि मुझे  
बहुत मस्ती मिल रही है.

“आअहाआ भाई ... बहुत मज़ा आ रहा है. थोड़ा और जोर से धक्का मारो ना प्लीज़ ! तुम्हें  
अपनी बहन की कसम है ... आज सारी ताकत झोंक देना मेरी चूत में ! ज़रा भी तरस ना  
खाना ! साली बहुत कुलबुलाती रहती है.”

फ़िर तो भाई ने धक्कों की झड़ी लगा दी, फ़चा-फ़च की आवाज़ निकल रही थी और मैं भी  
अपने चूतड़ को उछाल रही थी.

तब ही भाई का लंड झड़ने के करीब आया और भाई ने कहा- आरजू बहन, अब मैं झड़ने

वाला हूँ. तुम्हारी क्या पोजिशन है ?

मैंने कहा- क्या बात है, आज आप मुझसे पहले डिस्चार्ज हो रहे हैं ? वरना तो मेरा पानी दो बार निकलता था तब कहीं आप झड़ते थे ?

भाई ने कहा- बहुत दिन बाद आज चुदायी कर रहा हूँ ना, इसलिये ऐसा हो रहा है. क्या बतायें, वहां घर की बात ही और थी यहां तो साला मौका ही नहीं मिलता है.

तब मैंने कहा- यहां किसका डर है ?

भाई ने कहा- कहीं मुम्मानी की लड़कियां न देख लें ! या मामुजान को पता न चल जाये.

अब हम लोग काम की बात पर आये थे. तब मैंने भाई से कहा- भाई अफ़रोज़ भी तो जवान है, उसका भी तो मन करता होगा अपनी जवानी का मज़ा लेने का ! रही मुमानी की बात ... तो उनको तो मैं अकसर मामुजान से चुदाते हुए देखती हूँ. वो अब भी टांगें उठा उठा कर बहुत मज़े से चुदवाती हैं मामुजान से ... और मामु जान भी कम नहीं हैं बहुत दम है उनके लौड़े में ... इस उमर में भी थका डालते हैं मुमानी को ! उस दिन तो मैंने देखा कि वो मुमानी की गांड मार रहे थे और मुमानी चिल्ला रही थी.

भाई ने बड़ी हैरत से पूछा- अच्छा, मामुजान भी गांड मारते हैं ? शकल से तो बहुत शरीफ़ नज़र आते हैं.

तब मैंने कहा- भाई, पता है मैंने मुमानी की बातें भी सुनी थी, वो कह रही थी मामु से कि अब आप में पहले की तरह मज़बूती नहीं रह गयी. पहले तो सारी रात ही पड़े रहते थे मेरी ओखली में अपना मूसल डाले ... अब पता नहीं क्या हो गया है आपको. तब मामू ने कहा 'क्या बतायें बेगम, अब बच्चियां जवान हो गयी हैं, डर लगा रहता है कहीं हम दोनों की चुदायी देख कर बहक ना जायें. तब मुमानी ने कहा 'अरे वो अपने रूम में सो रही हैं तुम उनकी फ़िकर क्यूं करते हो, जम कर मारो आज मेरी गांड !' और फिर मामू ने बहुत जोरदार गांड चोदी थी मुमानी की !

मैं आगे बोली- मुझे तो अफ़रोज़ और आजरा पर तरस आता है कि बेचारी इतनी कातिल जवानी लेकर भी प्यासी हैं.

तब भाई ने कहा- क्या किया जा सकता है ?

तब मैंने कहा- भाई अगर अफ़रोज़ तुमसे चोदने को कहे तो क्या तुम चोदोगे उसे ?

तब भाई ने कहा- हां क्यूं नहीं, कहीं न कहीं तो वो अपनी चूत की प्यास बुझायेगी ही तब घर में ही क्यूं नहीं. अम्मी का कहना भी यही है कि चुदायी की पहल हमेशा घर से ही करनी चाहिये. तभी तो मैं हमेशा तुम्हारा ख्याल रखता हूँ.

तभी मैं भी झड़ने के करीब आ गयी और भाई से कहा- अब बातें बाद में चोदना, मैं झड़ रही हूँ, पहले मुझे सम्भालो !

भाई बातें भूल कर फिर से मुझे चोदने लगे और मैं झड़कर एक तरफ़ लेट गयी.

मैंने भाई से कहा- भाई, मैं अफ़रोज़ से बात करुंगी. हो सकता है काम बन जाये, बेचारी को तरसना ना पड़े !

और फिर धीरे से दरवाज़े की तरफ़ देखा तो अफ़रोज़ नीचे जा चुकी थी.

तब ही मैंने हंस कर कहा- साले बहुत मज़ेदार नाटकबाज़ हो तुम ! खूब जोरदार चुदायी का नाटक करते हो.

तब भाई ने कहा- साली रण्डी, तू भी किसी कुतिया से कम नहीं है. ऐसे चिल्ला रही थी जैसे पहली बार मरवा रही हो चूत ! अच्छा ये बताओ कि अब क्या अफ़रोज़ की चूत में खलबली हुई होगी ?

तब मैंने कहा- 100% खलबली हुई होगी. अरे तुम्हारा हलब्बी लंड देखकर अफ़्रो क्या उसकी तो अम्मी भी अपनी चूत पसार देगी तुम्हारे आगे ! ये तो अच्छा ही हुआ कि उसने हमारी चुदायी देख ली अब मुझे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी. काम आसान हो गया है साली खुद ही राज़ी हो जायेगी.

तब भाई ने कहा- ये तो अच्छा हुआ कि अफ़रोज़ ही आयी थी. अगर कहीं मामू जान आय होते तो क्या होता ?

मैंने कहा- तुम्हारा क्या होता ? जो होता मेरा होता वो अपना बम पिलाट लंड लेकर आ जाते और मेरी खुली चूत में डाल देते. हालत मेरी खराब होती !

तब भाई ने कहा- हालत क्यूं खराब होती मेरी जान ? तुम्हें तो मैं इतना एक्सपर्ट कर चुका हूँ कि तुम तो चार लंड एक साथ अपनी चूत में ले चुकी हो. फिर भला मामू किस खेत की मूली हैं.

मैंने कहा- साले मूली नहीं, पूरा बांस है उनका लंड मैंने देखा है कितना लम्बा है. अगर तेरी गांड में डाल दे तो बरदाश्त नहीं कर पायेगा. बातें चोद रहा है !

तब भाई ने हंसते हुए कहा- अच्छा अच्छा मेरी छिनाल बहन, अब कपड़े पहन लो क्योंकि मामू को तो तुम्हारी चूत झेल लेगी. अगर कहीं अफ़रोज़ अपनी अम्मी और बहन दोनों के साथ आ गयी तो मेरा लंड अभी इस हालत में नहीं है कि मैं उन तीनों को एक साथ झेल जाऊँ.

मैंने कहा- सिर्फ़ तीन क्यों ? मुझे नहीं गिन रहे हो ? चारों को चोदना पड़ेगा तुम्हें !

और ये कह कर मैं हंसने लगी और भाई भी हंसने लगे.

मैंने पहले वहीं छूत की नाली पर जाकर पेशाब किया तो भाई भी वहीं खड़े हो कर मूतने लगा.

तब मैंने कहा- यार आराम से बैठ कर मूतो, अभी अभी नहा कर आयी हूँ तुम्हारी छीटें आ रही हैं.

तब भाई भी वहीं बैठ कर मूतने लगा. हम दोनों ने साथ में मूतकर अपने अपने कपड़े पहने.

वह तो पूरे कपड़े पहन कर नीचे चला गया पर चूँकि मैं सिर्फ़ तौलिये में थी और अब तक नीचे मामूजान आ चुके थे तो मैंने अफ़रोज़ को अवाज़ दी कि मेरे कपड़े लेकर ऊपर चली

आये और जब अफ़फ़ो उपर आयी तो मुझे देख कर शरमा रही थी. मैं समझ रही थी कि ये साली क्यूं शरमा रही है. उसकी आंखें अभी भी गुलाबी हो रही थी और होंठ थरथरा रहे थे.

वो कांपते हाथों से मुझे कपड़े देकर नीचे जाने लगी तो मैंने कहा- जरा रुको, मैं भी चेंज कर लूं तो साथ साथ चलते हैं.

और उसके सामने मैंने तौलिया वहीं उतार दिया. वो बहुत गौर से मेरे दोनों बूक्स देखने लगी जो उसकी चूची से काफ़ी बड़े थे और मेरी बुर को भी अज़ीब नज़रों से निहार रही थी.

तब मैंने उसकी जम्पर के ऊपर से हाथ रखते हुए कहा- क्या देख रही हो इतने गौर से ? वो घबरा गयी पर खामोश रही. मैं उसकी चूची पर थोड़ा सा जोर देकर फिर से बोली- आखिर देख क्या रही थी तुम ? जो मेरे पास है वो तुम्हारे पास भी तो है.

तब उसने झिझकते हुए कहा- पर आपा आपकी तो हमसे बहुत बड़ी हैं ?

मैंने कहा- बतायेगी भी क्या ?

तब उसने मेरी चूची पर हाथ रख कर कहा- ये !

मुझे हंसी आ गयी उसके भोलेपन पे, मैंने कहा- नाम नहीं पता है इसका ?

उसने शरमाते हुए कहा- दुधू है !

तब तो मुझे बहुत जोरदार हंसी आयी फिर मैंने उसकी चूची को कपड़े के ऊपर से ही जोर से दबा कर कहा- धत्त बेवकूफ़ लड़की, दुधू नहीं चूची कहते हैं इसे ! इतनी बड़ी हो गयी है, अभी तक नाम नहीं पता, क्या देखती है तू टीवी वगैरह में ?

तब उसने कहा- आपा यहां कहां टीवी देखने देते हैं अब्बु जान ... उन्हें तो सिर्फ़ न्यूज़ ही पसंद है.

मेरा चूची मसलना उसे शायद अच्छा लग रहा था, वो कुछ बोल नहीं रही थी और मैं अपना काम कर रही थी.

मैंने कहा- मैं तेरी चूची सहला रही हूँ तो कैसा लग रहा है ?

उसने शरमाते हुए कहा- अच्छा लग रहा है.

तब मैंने कहा- अभी तो कपड़े के ऊपर से ही मसल रही हूँ. अगर पूरी नंगी होकर चूची दबवाओगी तो बहुत मज़ा आयेगा.

अब वो थोड़ी थोड़ी खुल रही थी और अपने हाथ धीरे से मेरी चूची पर रखते हुए बोली- आपा, आपकी चूची इतनी बड़ी कैसे हो गयी ? जबकि आपकी उमर भी मेरे बराबर ही है. तब मैंने कहा- ये सब मेरे अब्बु और भाई की करतूत है.

उसने चौंकते हुए पूछा- क्या मतलब ?

मैंने कहा- मेरी नन्ही जान, जब जवानी की प्यास लगती है तब चुदवाने का मन करता है. और जब घर में लंड मौजूद हों तो बाहर का रुख नहीं करना चाहिये. ज़माना बड़ा खराब चल रहा है. हमारी अम्मी का कहना है कि भले ही घर में चुदवा लो, पर बाहर वालों से नहीं क्योंकि साला आजकल एड्स का बहुत लफ़ड़ा है.

मेरे मुंह से चूत और लंड की बात सुनकर उसका मुंह खुला का खुला ही रह गया, वो बोली- हाय आपा, आप कैसे गंदी बात करती हो ? आपको शरम नहीं आती ?

तब मैंने कहा- जो लड़की अपने भाई और अब्बु से चुदवा चुकी हो, वो भी अपनी अम्मी के सामने ... उसे शरम कहां आयेगी. शरम तो तुझ ऐसे कुंवारी कमसिन छोक़रियों को आती है. अब देख तू भी मज़े लेना चाहती है पर शरमा भी रही है. अगर तू शरमा न रही होती तो तुझे थोड़ा सा मज़ा तो मैं ही दे देती.

उसे लाइन पर लाने की गरज़ से मैंने कहा तो वो एकदम से बोली- कहां शरमा रही हूँ आपा आप दबाइये न मेरी चूची ... बहुत मज़ा आ रहा है मुझे. प्लीज़ दबाइये न !

मैं समझ गयी अब साली भाई से चुदवा लेगी !

और मैंने उसकी समीज़ भी उतार दी उसकी छोटी छोटी संतरे की तरह चूची एकदम टाइट थी और उसके निप्पल तने हुए थे. मुझे उसकी चूची देखकर अपनी पुरानी चूचियों की याद



आ गयी जब मेरी चूची भी कड़ी हुआ करती थी. एक तरह से मुझे उससे जलन का एहसास होने लगा था मगर मैं उसकी निप्पल को मसलते हुए बोली- पता है लड़कियों की जब निप्पल लड़के लोग मसलते हैं तब उनकी जवानी फ़ड़क उठती है.

और फिर मैंने सोचा कि आज तक मैंने कभी किसी लड़की के साथ सेक्स का मज़ा नहीं लिया है क्यों ना आज इसका भी अनुभव कर लिया जाये !

यही सोच कर उसके हाथ अपनी चूची पर रखे और उससे कहा- इन्हें मसल डालो, जोर जोर से दबाओ मेरी चूची को !

वो मेरी चूची दबा रही थी, तब ही मैंने उसकी सलवार की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो उसकी सलवार मुझे भीगी भीगी सी लगी. मैं समझ गयी कि साली अभी थोड़ी देर पहले भाई और मेरी चुदायी का नज़ारा देख कर झड़ी है.

मैंने उसकी बुर को सलवार के ऊपर से सहलाते हुए कहा- ये गीली कैसे है अफ़रोज़ ? पहले तो उसने वहां से मेरा हाथ हटाया और फिर अपने पैर सिकोड़ते हुए बोली- पता नहीं !

तब मैंने उसकी सलवार का इजारबंद (नाड़ा) खोलते हुए कहा- अभी बताती हूँ कि ये गीली क्यों है.

वो अपने दोनों हाथ से मेरा हाथ पकड़ते हुए बोली- नहीं आपा, मैं नंगी हो जाऊँगी. प्लीज़ इसे मत खोलो !

मैंने हंसते हुए कहा- मेरी रानी, मुझे देख, मैं भी तो नंगी हूँ.

और उसके इजारबंद को खोल डाला, उसकी सलवार सरसरा कर पैरों में आ गिरी जिसे मैंने निकाल दिया.

उसकी बुर पे अभी हल्के हल्के सुनहरे बाल थे जो बहुत खूबसूरत लग रहे थे. मुझे इस तरह से अपनी बुर को निहारते देख कर उसने अपने दोनों हाथ से अपनी बुर छुपा ली. मैंने

उसकी दोनों चूची को मसलते हुए एक निप्पल मुंह में भर ली और चुभलाने लगी. वो सिसकियां लेने लगी और अपने हाथ अब बुर से हटा कर मेरे सर को अपने सीने पर दबाने लगी.

मैं तो यही चाहती ही थी, मैंने उसकी चूची की चुसायी कायदे से करना शुरू कर दी. मैंने अपने हाथ उसकी बुर की तरफ सरकाना शुरू कर दिया और जब हाथ को उसकी बुर पर रख कर सहलाया तो वो बहुत जोर से सिसक पड़ी- ईईस्स स्सस्सस्स आपा ... क्या कर रही हैं आप ? बहुत गुदगुदी हो रही है !

उसकी बुर बहुत फूली हुई थी और गोल्डन बाल तो कयामत का मंज़र लग रहे थे.

मैंने उसकी झांटे सहलाते हुए उसकी बुर की फ्रांक फ़ैलायी तो अंदर का गुलाबी हिस्सा देख कर मेरा भी मन उसकी बुर चाटने का करने लगा. मैंने सोचा कि आज पहली बार किसी लड़की की बुर चाट कर मज़ा लिया जाये.

और फिर उसकी चूची मुंह से बाहर निकाल कर अपने चेहरे को उसकी जांघों के बीच में लकर उसकी बुर की खुशबू लेने लगी. मैंने उससे कहा- अफ़फ़ो, तुम ऐसा करो कि लेट जाओ, तब ज्यादा मज़ा आयेगा.

मैंने ऐसा इसलिये कहा क्योंकि मुझे अपनी भी चूत तो उससे चुसवानी थी.

और ये कह कर अफ़रोज़ वहीं फ़र्श पर लेट गयी. मैंने उसके बुर की तरफ़ अपना मुंह ले जाकर पहले अपनी जबान से उसकी बुर की फ्रांक को सहलाया, फिर धीरे से अपने होंठों में उसकी बुर की फ्रांकों को रख कर चूसने लगी और अपनी चूत को उसके मुंह पर रखते हुए उससे कहा- अफ़फ़ो, तुम भी ऐसे ही करो मेरे साथ !

उसने कहा- नहीं आपा, मुझे घिन आती है.

तब मैंने उसकी बुर की चिकोटी काट कर कहा- वाह मेरी चुद्धो रानी, मैं चूस रही हूँ तेरी गीली बुर और तुझे शरम आ रही है ? चल जल्दी से चुम्मा ले चूत का !

और ये कह कर अपनी चूत को ज़बरदस्ती उसकी मुंह पर अड़ा दिया. वो न चाहते हुए भी चूमने लगी मगर मैं तो बहुत चाव से उसकी छोटी सी बुर को चूस रही थी और अब वो आह आह करने लगी थी, उसकी बुर से बहुत ढेर सारा रस बाहर निकल पड़ा जिसे मैं चूस कर चाट गयी. फिर जब उसकी बुर पूरी तरह से चिकनी हो गयी तब उसमे मैंने अपनी एक उंगली घुसेड़ दी.

वो कराह उठी- आआआह आपाजान ... क्या कर रही हैं ? बहुत दर्द हो रहा है.  
तब मैंने कहा- मेरी रानी, अभी बहुत अच्छा लगेगा तुम्हें जरा बरदाश्त करो !

और फिर दो उंगली एक साथ उसकी बुर में डाल दी और आगे पीछे करने लगी. अब तो अफ़फ़ो को भी मज़ा आने लगा, वो मेरी चूत को जोर से शिप करते हुए अपनी चूतड़ को उछालने लगी. मैं भी अपनी अपनी उंगली को बहुत तेज़ी के साथ डालने लगी थी.  
तभी वो एक बार और झड़ी और फिर सुस्त हो गयी.

तब मैंने पूछा- क्यों रानी मज़ा आया ?

उसने कहा- अल्लाह कसम आपा, बहुत मज़ा आया !

तब मैंने कहा- रानी, अगर तुम थोड़ी देर पहले आ जाती तो भाई से चुदवा भी देती तुझे !  
अभी थोड़ी देर पहले ही तो मैंने चुदवाया है.

वो बोली- मैं देख चुकी हूँ आपा आपकी चुदायी ! मेरी सलवार तभी गीली हुई थी.

मैंने कहा- हां मुझे पता है तू छुप कर सारा तमाशा देख रही थी. मैंने देखा था. ऐ तुझे आ जाना चाहिये था न ! चलो कोई बात नहीं, अब तो तू खुल ही गयी है. मैं भाई से कह दूंगी वो तुझे मज़ा देगा

तब अफ़रोज़ ने कहा- आपा बहुत दर्द होता है क्या चुदवाने में ?

मैंने कहा- नहीं, पहले तो थोड़ा सा होगा बाद में सब ठीक हो जायेगा.

“पर आपा, भाई का हथियार भी तो बहुत मोटा ताज़ा है !”

तब मैंने कहा- देख अफ़रोज़, अगर हमारे साथ रहना है तो सब बात खुल कर करनी होगी.  
बता उसको क्या कहते हैं ?

तब वो शरमाते हुए बोली- लौड़ा कहते हैं आपा.

मैंने कहा- ये हुई न बात ! चल अब जल्दी से कपड़े पहन लेती हूँ, भूख भी बहुत लगी है.

तब अफ़रोज़ ने कहा- किस चीज़ की भूख लगी है आपा ?

मैं उसकी शरारत समझ गयी, बोली- ज्यादा शरारत न करो. वरना भाई से कह कर तेरी  
नन्ही सी बुर की धज्जियां उड़वा दूंगी.

तब वो माफ़ी मांगते हुए बोली- रहम करना मेरी आपा, अपनी बहन की इस नाजुक सी चूत  
पर !

और फ़टाफ़ट हम लोग कपड़े पहन कर नीचे चले आये.

उसके बाद की कहानी मैं अगली बार बताऊँगी.

ओ के तो फ़्रेंड्स ... हर बार की तरह इस बार भी मुझे बताइयेगा की कैसी रही मेरी  
कहानी !

## Other stories you may be interested in

### मेरा पहला प्यार सच्चा प्यार-8

अभी तक आपने पढ़ा कि मैं अपनी सहेली कर घर में अपने आशिक के साथ नंगी हालत में पकड़ी गई और मुझे बदनामी का दंश झेलना पड़ा. अब आगे : फिर मैंने मम्मी के फोन से दूसरे दिन आशीष को फोन [...]

[Full Story >>>](#)

### आपा के हलाला से पहले खाला को चोदा-3

आदाब दोस्तो, मेरी सेक्स कहानी के पिछले भाग आपा के हलाला से पहले खाला को चोदा-2 पर आप सबकी ढेर सारी ईमेल मिलीं ... आप सबके इस प्यार के लिए बहुत शुक्रिया. मेरी पूर्व कहानी में आपने पढ़ा था कि [...]

[Full Story >>>](#)

### फरवरी 2019 की बेस्ट लोकप्रिय कहानियाँ

प्रिय अन्तर्वासना पाठको फरवरी 2019 प्रकाशित हिंदी सेक्स स्टोरीज में से पाठकों की पसंद की पांच बेस्ट सेक्स कहानियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं ... जेठ जी मुझे चोद कर मजा दिया मैं नींद में थी, तभी मुझे महसूस हुआ कि मेरे [...]

[Full Story >>>](#)

### फुफेरी बहन की कुंवारी चूत

नमस्कार दोस्तो, कैसे हैं आप लोग ! मेरा नाम समीर खान है, मैं उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर से हूँ. मेरे घर में मेरे अलावा 3 बड़े भाई, अम्मी और अब्बू रहते हैं. अन्तर्वासना पर यह मेरी पहली कहानी है और [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरा पहला प्यार सच्चा प्यार-4

इस सेक्सी कहानी के तीसरे भाग में आपने अब तक पढ़ा कि मुझे झाड़ियों में दो लड़कों ने चोदने की नीयत से पकड़ लिया था. मगर किस्मत से मैं छूट गई थी और मेरी पैंटी न मिली तो मैं बिना [...]

[Full Story >>>](#)

